लोक साहित्य में लोकोक्तियों का महत्व

डॉ. पदमाराम
फोन नं. – 9460923103

ग्रामीण जनता अपने दैनिक व्यवहार में अनेक लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों, सूक्तियों आदि काप्रयोग करती है। इससे उनकी वचन–चातुरी का पता चलता है लोकोक्तियों के प्रयोग सेकिसी उक्ति या कथन में शक्ति आ जाती है और श्रोताओं पर उसका बड़ा प्रभाव पड़ता है।

बच्चा जब छोटा होता है, तब उसकी माता या धाय उसे पालने में सुलाकर लोरियां गाती है। इन लोरियों का उद्देश्य मनोहर संगीत पैदाकर बालक को निद्रा देवी की गोद में देना है। बड़े होने पर बालक अनेक प्रकार के खेलों को खेलते समय विभिन्न गीत गाते हैं। जनता के जीवन में ये लोकोक्तियां, पहेलियां, सुक्तियां, मुहावरे पालने और खेल के गीत बिखरे पड़े हैं। अतः उनको 'लोक–सुभाषित' का नाम दिया गया है।

लोकोक्तियाँ

लोक साहित्य में लोकोक्तियों का महत्त्वपूर्ण स्थान है इनके द्वारा किसी कथन में तीव्रता और प्रभाव उत्पन्न किया जाता है इससे भाषा में बल आ जाता है और ये श्रोताओं के हृदय पर अपना प्रभाव डालती है।

लोकोक्तियां अनुभवसिद्ध ज्ञान की निधि है। मानव ने युग–युग से जिन तथ्यों का साक्षात्कार किया है। उनका प्रकाशन इनके माध्यम से होता है। ये चिरकालीन अनुभूत ज्ञान के सूत्र हैं समास रूप में चिरसंचित अनुभूत ज्ञानराशि का प्रकाशन इनका प्रधान उद्देश्य है. शताब्दियों से किसी जाति की विचारधारा किस ओर प्रवाहित हुई है यदि इसका दिग्दर्शन करना हो तो उस जाति की लोकोक्तियों का अध्ययन आवश्यक है।

परम्परा :– लोकोक्तियों की परम्परा अत्यन्त प्राचीन है अनुसंधान करने से पता चलता है कि वेदों में भी इनकी सत्ता उपलब्ध है। उपनिषदों में भी लोकोक्तियों की कमी नहीं है संस्कृत साहित्य में तो ये प्रचूर परिमाण में पायी जाती हैं। महाकवि कालिदास ने अपने ग्रन्थों में लोकोक्तियों का बड़ा ही सुन्दर प्रयोग किया है जिससे उनकी भाषा बड़ी प्रभावोत्पादक हो गई है 'प्रियेषु सौभाग्यकला हि चारुता' को लिखने वाला कवि यह अच्छी तरह से जानता था कि 'रिक्तः सर्वो भवति हि लघुः पूर्णता गौरवाय'। भारवि, माघ और श्रीहर्ष के ग्रन्थों में इनका प्रयोग उपलब्ध होता है। नैषधियचरित के रचयिता ने 'ह्रदे गंभीरे ह्रदि चावगाडे शंसन्ति कार्यावतरं हि सन्तः लिखकर' बड़े ही अनुभव की बात कही है। महाकवि राजशेखर ने प्राकृत भाषा में लिखे गये 'कर्पूरमंजरी' नामक सट्टक में 'हत्थ कंकण कि दप्पणेण पेक्खी' आदि का उल्लेख किया जो हिन्दी में 'कर कंगन को आरसी क्या' इस सुन्दर तथा चुस्त रूप में जीवित है पालि ग्रन्थों में भी ऐसी लोकोक्तियां मिलती है जिनसे अनुभूति की व्यंजकता होती है।

पंचतंत्र हितोपदेश आदि ग्रन्थों में नीति सम्बन्धी उक्तियों का प्रयोग किया गया है। 'आयसैः आयस छेद्यम् अथवा कण्टकेनैव कण्टकम्' या 'शठे शाठ्यं समाचरेत्' ऐसी उक्तियां हैं जिनमें नीति या उपदेश भरा पड़ा है। 'क्षीणः नराः निष्करुणाः भवन्ति' को लिखकर संस्कृत कवि ने बहुत बड़े मनोवैज्ञानिक तथ्यों का उद्घाटन किया है।

संस्कृत में लोकोक्तियों को सुभाषित या सूक्ति कहते हैं। जिसका अर्थ है सुन्दर रीति से कहा गया कथन (सुष्ठु भाषित सुभाषितम्) इस शब्द का प्रयोग नीचे संस्कृत श्लोक में इस प्रकार किया गया है–

''सुभाषितेन गीतेन, युवतीनां च लीलया।
मनो न रमते यस्य, स योगी अथवा पशुः।।''

सुन्दर रीति से कही गई उक्ति को ही सूक्ति कहते हैं, इसी उक्ति को यदि लोक अर्थात् साधारण मनुष्य प्रयोग में लाने लगते हैं, तब उसका नाम लोकोक्ति पड़ जाता है।

लोकोक्तियों में संग्रहः–

संस्कृत साहित्य लोकोक्तियों का अक्षय भण्डार है, परन्तु इनका विस्तृत संग्रह प्रकाश की प्रतीक्षा कर रहा है। गत शताब्दी में कर्नल जैकब ने लौकिक न्यायांजलि नाम से संस्कृत साहित्य में उपलब्ध न्यायों का अपूर्व संग्रह तीन भागों में प्रस्तुत किया था। काकतालीय न्याय, घुणाक्षरन्याय, अंधदर्पण न्याय आदि न्यायों को लेकर जैकब ने इनकी व्याख्या करते हुए इन्हें स्पष्ट करने का प्रयास किया।

हिन्दी भाषा में लोकोक्तियों के संग्रह की ओर विद्वानों का ध्यान बहुत कम आकृष्ट हुआ है। सन् 1886 ई. में फेलन ने हिन्दी कहावतों के सम्बन्ध में अपना प्रसिद्ध ग्रन्थ 'डिक्शनरी ऑफ हिन्दुस्तानी प्रोवर्ब्स' लिखा जिसमें मारवाडी, पंजाबी, भोजपुरी और मैथिली कहावतों का संकलन किया गया है। फिर भी इस ग्रन्थ में पूर्वी हिन्दी (भोजपुरी) की लोकोक्तियां ही अधिक हैं। काश्मीरी लोकोक्तियों पर जो एच. नोबल्स का नाम उल्लेखनीय है। ओझा अभिनन्दन ग्रन्थ में श्रीमती सुमित्रा देवी शास्त्रिणी द्वारा लिखित 'देरेवाली कहावते' इस दिशा में स्तुत्य प्रयास हैं। श्री शालिग्राम वैष्णव ने नागरी प्रचारिणी पत्रिका (सम्वत् 1984) में गढ़वाली भाषामें पखाणा लिखकर गढवाली लोकोक्तियों पर प्रचुर प्रकाश डाला है। सन् 1892 ई. में श्री उपरेती ने प्रोवर्ब्स एण्ड फोकलोर ऑफ कुमाऊँ एण्ड गढवाल नामक ग्रन्थ लिखा था। जिसमें गढ़वाल और कुमाऊँ की लोकोक्तियों का बड़ा विस्तृत संग्रह उपलब्ध है।

बहुत सी ऐसी लोकोक्तियाँ संस्कृत की हैं जो हिन्दी में उसी अर्थ में आज भी व्यवहृत होती हैं। 'वरमद्य कपोतो श्वो मयूरात्' अर्थात् कल के मोर

से आज का कबूतर अच्छा है। यह लोकोक्ति हिन्दी में आज भी 'नौ नकद न तेरह उधार' के रूप में विद्यमान है। लोकोक्तियों की विषेशताएँ :–

1. लोकोक्तियों की सबसे पहली विशेषता है इनकी समास शैली। इन कहावतों में इनके रचियताओं ने गागर में सागर भरने का प्रयास किया है।लोकोक्तियां आकार में तो छोटी होती हैं, परन्तु इनमें विशाल भाव राशि सिमटी पड़ी रहती है। उदाहरण के लिए 'तीन कनौजिया तेरह चूल्हा' को ही लिजिए। इन चार शब्दों में बहुत बडा भाव भरा पड़ा है इसका अर्थ यह कि कान्यकुब्ज ब्राह्मण अपने को श्रेष्ठ समझते हैं। जैसा कि 'कान्य कुब्जाः हिजाः श्रेष्ठाः' इस उक्ति से स्पष्ट होता है। अतः वह खानपान में छुआछूत का बड़ा विचार रखते है जाति वालों का भी छुआ हुआ अन्न नहीं खाते। वे आपस में इतना भेदभाव रखते है यदि भी तीन भी कनौजिया होगा तो भोजन पकाने के लिए तेरह चुल्हों की आवश्यकता पड़ेगी इतना अर्थ विस्तार इन चार शब्दों में भरा हुआ है। एक दूसरी कहावत है 'बार कबर भीतर सब देवता पीतर' अर्थात भोजन करने के पश्चात ही देवपूजा की चिन्ता करनी चाहिए। इस छोटी लोकोक्ति में भौतिकवादी चार्वाक सम्प्रदाय के सिद्धान्त की ओर संकेत किया गया है चार्वाक का यह मत था कि–

''यावत् जीवेत् सुखं जीवेत् ऋणं कृत्वा घृतं पिबेत्।
भस्मी भूतस्य देहस्य पुनरागमनं कुतः।।''

2. लोकोक्तियों की दूसरी विशेषता– अनुभूति और निरीक्षण है, लोकोक्तियों में मानव जीवन के युग–युग की अनुभूतियों का परिणाम और निरीक्षण शक्ति अन्तर्निहित है। काशी–निवास के सम्बन्ध में एक लोकोक्ति प्रसिद्ध है।

''रॉड़ सॉड, सीढी, संन्यासी;
इनसे बचै तो सेवै कासी।''

कहने की आवश्यकता नहीं कि इस उक्ति में बहुत कुछ सत्य का अंश छिपा हुआ हैलोगों ने चिर अनुभव के पश्चात ही इसका निर्माण किया है। घाघ और भड्डरी के नाम से हिन्दी में बहुत सी लोकोक्तियां प्रचलित हैं इनमें ऋतु सम्बन्धी खेती के लिये उपयोगी बातें कही गई हैं इसमें संदेह नहीं कि घाघ और भड्डरी ने अपनी पैनी निरीक्षण शक्ति के बल से ऋतु सम्बन्धी तथ्यों का अनुसंधान करके ही इन लोकोक्तियों का निर्माण किया होगा।

प्राचीनकाल के ये ऋतु विशेषज्ञ किसी यंत्र की सहायता से नहीं अपितु अपनी निरीक्षण शक्ति के द्वारा ही ऋतुओं के परिवर्तन को उद्घोषित करते थे। वायु परीक्षा सम्बन्धी निम्नांकित कहावत में विभिन्न दिशाओं से वायु चलने से उसका क्या प्रभाव पड़ता है। इसका सुन्दर रीति से दिग्दर्शन कराया गया है।

''जो पै पवन पुरब से आवै उपजै अन्त मेघझर लावै।
अग्नि कोन जो बहै समीरा पड़ै काल दुःख सहै सरीरा।
दाखिन बहै जल थल अलगोरा, ताहि समय जूझै बड़ बीरा।
नैऋत कोन बूँद ना परै, राजा परजा भूखन मरै।
पच्छिम बहै नीक कर जानो, पड़ै तुसार तेज उर मानो।
उत्तर उपजै बहु धन धाना, खेत बात सुख करै किसाना।
कोन इसान दुन्दुभी बाजे, दही भात भोज न सब गाजै।
जो कहु हवा अकासे जाय, परै न बूंद काल परि जाय।

घाघ ने एक दूसरी जगह पर लिखा है कि

''सावन में पुरवइया, भादों में पछियाँव।
हरवाहे हर छोड़दे, लरिका जाय जियाव।''

अर्थात् सावन में पुरवैया हवा और भादों में पछुवा हवा चले तो वर्षा न होने के कारण बड़ा कष्ट होता है। यदि पूर्वाषाढ नक्षत्र में पुरवैया हवा चले तो इतनी अधिक वर्षा होगी कि सुखी नदी में नाव चलने लगेगी।

''जो पुरुवा पुरवाई पावै,
सूखी नदिया नाव चलाये।''

वर्षा विज्ञान के सम्बन्ध में भी घाट बड़ी सटीक उक्तियाँ कहि है। जैसे–

''माहा के उखम जेठ के जाड
पहिले बरखा भरिमा ताल।
कहै घाघ हम होब वियोगी
कुवौ खोदि के धोइहै धोबी।'–

अर्थात् यदि माध में गर्मी पड़े और जेठ में शीत की प्रधानता हो और यदि प्रथम वर्षा में ही तालाब भर जाय तो अवर्षण के कारण धोबी कुआँ खोदकर कपडा धोयेगा। घाघ की दूसरी उक्ति है –

''रोहिनी बरसै मृग तपै, कुछ–कुछ अद्रा जाय।
कहे घाघ घाघिनि से, स्वान भात नहीं खाय।।

अर्थात् रोहिणी नक्षत्र में वर्षा हो मृगशिरा नक्षत्र में खूब गर्मी पड़े और आर्द्रा में भी कुछ वर्षा हो इतना अधिक अन्न पैदा होगा कि कुत्ता भी भात को नहीं खायेगा।

3. लोकोक्तियों की तीसरी विशेषता है– इनकी सरलता। ये लोकोक्तियाँ बड़ी सरल भाषा में निबद्ध है, जिससे सुनते ही इनका अर्थ हृदयंयम हो जाता हैं। इनकी यही सरलता इनके अतिशय प्रभाव उत्पन्न करने का कारण हैं। जो वस्तु अर्थ कठिन के कारण समझ में नहीं आती उसका प्रभाव हृदय पर नहीं पडता परन्तु कहावते अपनी सरसता और सरलता के कारण हृदय पर सीधे चोट करती है। जैसे–

''नसकट पनही, बतकट जोय;
जो पहिलाँठी बिटिया होय।
पातर कृषी, बौरहा भाय,

घाघ कहै, दुःख कहाँ समाय।।''

यह बात किसी से छिपी नहीं हैं कि पैर के नस को काटने वाला जूता और बात काटने वाली (लडाकू या झगडालू) स्त्री कितनी दुःखदायी होती है। घाघ ने इसी बात को सीधी–सादी भाषा में कहा जिसका प्रभाव ग्रामीणजनों के हृदय पर बहुत ही अधिक होता हैं। इस प्रकार लोक साहित्य में लोकोक्ति का बड़ा ही महत्त्वपूर्ण स्थान हैं।

संदर्भ ग्रन्थ सूची –

1. *लोक साहित्य की भूमिका –डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय, पृ.–150–153*
2. *लोक–साहित्य स्वरूप और सिद्धांत –डॉ. सोहनदान चारण*
3. *भारतीय लोक–साहित्य – डॉ. श्याम परमार*
4. *राजस्थानी कहावतें, भूमिका भाग 1– डॉ. सुनितिकुमार चाटुर्ज्या*
5. *पृथ्वी पुत्र – डॉ. वासुदेव शरण अग्रवाल*
6. *हिंदी–साहित्य कोश, खंड 1 सम्पादक–धीरेन्द्र वर्मा*
7. *भारतीय संस्कृति के लोक–तत्त्व– डॉ. वासुदेवशरण अग्रवाल*
8. *लोक साहित्य की भूमिका –डॉ. कृष्णदेव उपाध्याय*

Contributor Details:

डॉ. पदमाराम

फोन नं. – 9460923103